आधुनिक भारतीय कला में वॉश पद्धति का योगदान

रजनी बाला एवं राम विरंजन

सारांश

कला में कल्पना को साकार करने के लिए अलग–अलग माध्यम एवं सामग्री का प्रयोग किया जाता है, जिनमें से जलरंग एक प्रमुख माध्यम है। भारत में बंगाल स्कूल से वॉश प्रद्धति का विकास शुरू हुआ। वॉश तकनीक वह विधि है, जिसमें चित्रांकन के लिए रेखाओं, रंगों और पारदर्षिता ही, चित्र को आक.र्षित बनाती है। वॉश तकनीक को अवर्नींद्रनाथ टैगोर ने शिखर तक पहुँचाया, तथा धीरे–धीरे इस तकनीक को प्रोत्साहन मिलता गया, लेकिन यह प्रविधि कुछ संस्थानों तक सीमित रही। शोध पत्र में वॉश पद्धति का विकास, तकनीक एंव भारतीय कलाकारों का अध्ययन किया गया है।

बीज शब्द : बंगाल स्कूल, वॉश प्रद्धति, बंगाल स्कूल के चित्रकार, वॉश पद्धति का इतिहास

शोध पत्र का महत्व

शोध पत्र में वॉश पद्धति के बिंदुओं और महत्व पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिनमें आधुनिक वॉश कलाकारों के विषय एवं तकनीक पर चर्चा की गयी है। आधुनिक भारतीय चित्रकला में यह पद्धति बंगाल स्कूल फली–फूली, परन्तु समय के साथ–साथ यह पद्धति कुछ ही संस्थानों तक सीमित रही और धीरे–धीरे विलुप्त होती जा रही है, जिसकी ओर कलाकारों को ध्यान देना आवश्यक है। शोध पत्र में आधुनिक और समकालीन कलाकारों ने वॉश पद्धति में चित्र कार्य किया है, उनका विस्तृत अध्ययन किया है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य लुप्त होती वॉश पद्धति को सुरक्षित रखाना है। शोध पत्र का उद्देश्य यह भी है, कि चित्रांकन के लिए माध्यम पर प्रतिबंध नहीं है, लेकिन भारतीय कला को उजागर करने के लिए भारतीय चित्रों में वॉश पद्धति को समझना अति आवश्यक है। वॉश तकनीक को विलुप्त होने से बचाने के लिए यह जानना आवश्यक है, कि किन कारणों से वॉश तकनीक विलुप्त होती जा रही है। शोध पत्र में उन कारणों और भारतीय वॉश चित्र तकनीक के कलाकारों को उजागर करने की कोशिष की है।

साहित्य समीक्षा

पुस्तकें

- भारतीय चित्रकला का इतिहास, डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, अनिल वर्मा, संगीता वर्मा,

2020, बरेली, इस पुस्तक में अविनाश बहादुर तथा उनके सहयोगी साथियों ने आधुनिक कलाकारों के विशय तथा वॉश प्रविधि की तकनीक व प्रकिया के बारे में स्पश्ट रूप से लिखित साम्रगी उपलब्ध करवाई है।

- द पेंटिंग ऑफ द थ्री टैगोर, फरोम रिवाईवल टू मॉर्डनिटि, अवनींद्रनाथ टैगोर, गगनेंद्रनाथ टैगोर, रवींद्रनाथ टैगोर, रतन परीमू, नई दिल्ली, 2011, लेखक ने पुस्तक में एक अध्याय में धुले हुए चित्रों के विषय में व जलरंग माध्यम के चित्रांकन की अलग से चर्चा की गई है।

- आधुनिक भारतीय कला, ज्योतिष जोशी, दिल्ली, 2010, पुस्तक में आधुनिक भारतीय कला के बारे में तथा गगनेंद्रनाथ टैगोर की कृतियों, जिसमें उन्होंने जलरंग तथा सुनहरी स्याही का प्रयोग करके चित्रों की रचना आदि का अध्ययन किया गया है।

- समकालीन भारतीय कला, राम विरंजन, 2003, कुरुक्षेत्र, राम विरंजन ने बहुचर्चित पुस्तक समकालीन भारतीय कला अवधारणा और जलरंग से संबंधित कुछ कलाकारों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

- भारतीय चित्रकला, वाचस्पति गैरोला, 1963, इलाहाबाद, प्रस्तुत पुस्तक में वाचस्पति गैरोला ने प्रागैतिहासिक युग से लेकर आज तक भारतीय चित्रकला की प्रमुख सहायक शैलियों पर ऐतिहासिक ढंग से विवेचन प्रस्तुत करने वाली मौलिक रचना की है।

- भारतीय कला चिंतन, एक कला विचार, ज्योतिष जोशी, 2010, दिल्ली, भारत में चित्रकला की स्थिति, रामचंद्र शुक्ल.

पत्रिका

- कला दीर्घा, दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2011, वर्ष 11, अंक 22, शांतिनिकेतन की कला परम्परा का प्रभाव, अवधेष अमन, इस लेख में वॉश पंरपरा और टैंपरा शैली की शुरुआत पटना स्कूल ऑफ आर्ट में सत्यनारायण चटर्जी और उमानाथ झा ने की थी।

- कला दीर्घा, दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अप्रैल 2010, वर्ष 10, अंक 20, भारतीय समकालीन कला और लखनऊ के कलाकार, डॉ. अवधेश मिश्र, इस कला दीर्घा में आधुनिक वॉश प्रविधि में कार्य करने वाले कलाकारों तथा उनसे प्रभावित और उनके शिष्यों के योगदान के बारे में बताया गया है।

- कला दीर्घा, दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2015, वर्ष 16, अंक 31, कला में भारतीयता की खोज और बंगाल में नई शैली का जन्म, निशांत, इस पत्रिका में बंगाल शैली और रवींद्रनाथ टैगोर की कलाकृतियों के विषय में जानकारी मिलती है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है, कि जलरंग कंपनी स्कूल से शुरू हुआ था।

वॉश प्रद्धति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रत्येक देश की अपनी निजी संस्कृति होती है, जिसका स्वरूप उसके साहित्य एवं कलाकृतियों में

प्रतिबिम्बित होता है। ''भारत एक संस्कृति प्रधान देश है, जिसकी संस्कृति का गौरव उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम तक पृथक्–पृथक भागों में दिखाई देता है तथा इसकी शैलियों में भी भिन्नता पाई जाती है। मानव संस्कृति में कलात्मक तथा आध्यात्मिक विकास का उतना ही महत्व है, जितना वैज्ञानिक उपलब्धियों का। कलात्मक विकास में मुख्यत: साहित्य कला, स्थापत्य कला, संगीत कला, मूर्ति कला, नृत्य कला एंव नाट्क कला का विशेष महत्व है''(Verma 1) चित्र बनाने के लिए आदिकाल से लेकर आज तक मानव ने विभिन्न प्रकार के चित्र–तल, सामग्रियों व तकनीकों का उपयोग किया हैं। चित्र बनाने के लिए जलरंग, तैलरंग व एक्रेलिक आदि रंगो का प्रयोग किया जाता है अथवा इनके प्रयोग करने की तकनीक भिन्न–भिन्न होती है। जलरंग तकनीक में रंगो की पारदर्षिता का उपयोग ही इसकी प्रमुख विशेषता है। ''इनमें से इंक और स्याही रंग(वॉश प्रविधि)चीन से कोरिया और कोरिया से जापान में विकसित हुई, इस विधि का उद्भव तांग राजवंश(618–906) और सांग राजवंश (960–1279) काल मे हुआ था।''(Ink wash painting) जापान में चित्रकला का आरंभ बौद्ध धर्म के आगमन के साथ–साथ प्रांरभ होता है। जापानी कलाकार स्याही के माध्यम से चित्रण करना पसंद करते थे। भारत में वॉश चित्रण को ओकाकुरा, याकोयामा, हिशिदा, कत्सुता शोकीन के आने से प्रोत्साहन मिला। बंगाल में विदेशी कलाकारों के आगमन से देश के विद्यार्थियों को नई शैलियों और तकनीकों को सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने कलकत्ता कॉलेज के विद्यार्थियों को वॉश तकनीक से परिचित कराया, धीरे–धीरे वॉश प्रविधि को प्रोत्साहन मिलता गया। बंगाल स्कूल के प्रमुख कलाकार अवनींद्रनाथ टैगौर ने चीनी–जापानी व भारतीय चित्रण विधियों के मिश्रण में वॉश प्रविधि के अन्तर्गत अनेक चित्र बनाए। जलरंग वॉश तकनीक एक परंपरागत तकनीक है और बंगाल में यह तकनीक बहुत लोकप्रिय हुई।

''पश्चिमी कला में जलरंग का उपयोग कलाकार जॉन वाइट तथा जर्मन कलाकार अल्बर्ट ड्यूर द्वारा शुरू किया था तथा उनसे प्रभावित पॉल सैंड्बी और जॉन कॉन्स्टेबल को जलरंग का अग्रणी बोला जाता है।''(Rodwell 47) ''चीन के कलाकार इसे ''शुईमोहुआ'' के रूप में संदर्भित करते है, जबकि जापानी कलाकार इसे ''सुइबोकुगा या सुमी–ई'' कहते है और कोरियन इसे(स्मोकआवा) के रूप में जानते है तथा भारत में यह शैली वॉश पद्धति के नाम से विख्यात है।''(Goyal 58-60) स्याही चित्रांकन और वॉश पद्धति के लिए पारंपरिक माध्यम काली स्याही था, जिसे चित्र बनाने के लिए कागज या रेशम का उपयोग किया जाता था।

बंगाल स्कूल का उद्भव और भारत में वॉश पद्धति का आगमन:–

भारत में अंग्रेजों का आगमन और ईस्ट इंड्यिा कंपनी की स्थापना पुर्तगाली व्यापारियों का परिणाम थी। ब्रिटिश ईस्ट इंड्यिा कंपनी ने समस्त आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक अर्थव्यवस्थाओं में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। उन्होंने भारतीयों को पढ़ाना शुरू किया, उसके लिए भारत में अलग–अलग स्थान पर कॉलेज स्थापित करवाए। भारत में सबसे पहले मद्रास, कलकत्ता और मुंबई में स्कूल स्थापित किए गए थे, जहाँ पर भारतीय कलाकारों को शिक्षित किया जाता था। ''1885ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना और स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव बंगाल स्कूल पर स्पष्ट दिखाई देता है। 1884ई. में ई. वी. हैवल को प्रधानाचार्य के रूप में मद्रास कॉलेज ऑफ आर्ट में नियुक्त किया गया था।'' (Verma 276) इसी स्थान से ई. बी. हैवल ने उन्होंने भारत का भ्रमण किया और भारतीय कला को सबके सम्मुख प्रस्तुत किया। ई. वी. हैवल ने स्वदेशी आंदोलन में अवनींद्रनाथ टैगोर, रवींद्रनाथ टैगोर, सिस्टर निवेदिता और ए. के. कुमार स्वामी का साथ दिया तथा इन्होंने मिलकर बंगाल स्कूल को प्रसिद्धि दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विदेशी कलाकारों और कला इतिहासकारों के साथ–साथ लेडी हैरिंघम ने भारत में आगमन किया, तब उनका परिचय टैगोर परिवार से हुआ, उसके बाद ''अवनींद्रनाथ टैगोर ने अपने शिष्यों, नंदलाल बोस, असित कुमार हाल्दार, वेंकटप्पा, एस. एन. गुप्ता को हैरिंघम के साथ अजंता और बाघ के चित्रों की प्रतिलिपियाँ बनाने के लिए भेजा था।''(Jyotish 35) भारतीय कला को अग्रसारित करने के लिए ई.वी हैवल, ऐ.के.कुमार स्वामी, सिस्टर निवेदिता, ओकाकुरा और उनके शिष्य याकोयामा, हिषिदा आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रयास से भारतीय कला को एक नई पहचान मिली, जिससे सभी कलाकार स्वतंत्र रूप से कार्य कर सके। बंगाल स्कूल 1895 से 1910 ईस्वी के मध्य क्षेत्र में बंगाल कला शैली से संबंधित है। यह प्रविधि अवनींद्रनाथ टैगोर के योगदान से अभिमुख हुई और शीघ्र ही शांतिनिकेतन, एंव गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड, क्राफ्ट, कलकत्ता के विद्यार्थियों के माध्यम से भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में प्रचलित हुई। भारतीय पुर्नजागरण काल, जिसका नव्य संस्थान बंगाल में रवींद्रनाथ टैगोर, अवनींद्रनाथ टैगोर की प्रेरणा तथा नंदलाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी आदि कलाकारों ने वॉश तकनीक को अन्य कला महाविद्यालयों के प्रागंन में रोपने, पुष्पित और पल्लवित करने के लिए भेजा गया था। ''भारत का पहला स्कूल (मद्रास 1850 ई), कलकत्ता (1854), मुम्बई (1857) में स्थापित हुआ था। 1901–1902ई. में ओकाकुरा भारत में यात्रा के दौरान आए थे।'' (Chaturvadi 45) तथा उन्होंने देश के ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। उन्होंने दोनों देशों के बीच कलात्मक आदान–प्रदान को बढ़ावा देने का प्रयास किया। जापानी कलाकार ताइकान और हिशिदा 2 वर्ष के लिए भारत में रहे थे और उन्होंने कलकत्ता स्कूल में वॉश पद्धति की शिक्षा दी। अवनींद्रनाथ टैगोर ने इस तकनीक को अपने शिष्यों तक पहुँचाया तथा उनके शिष्यों ने इस वॉश पद्धति को अपने शिष्यों तक स्थानातंरित किया। जिस शिल्पकला कार्य पद्धति को विद्यार्थियों ने अपनाया, उसको बाद में नव्य बंगाल स्कूल के कलाकार कहा जाने लगा। यह विधि आने वाले समय में प्रसिद्ध हो गई। वॉश पद्धति को विभिन्न कॉलेज में पल्लवित किया गया:–

1. नंदलाल बोस:– इन्स्टीट्यूट ऑफ फाईन आर्टस, कला भवन, शान्तिनिकेतन
2. डी.पी.राय चौधरी:– गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फाईन आर्टस एण्ड़ क्राफट, चेन्नई
3. क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार:– इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
4. सुमेन्द्रनाथ गुप्त, एम.ए.आर चुगताई:–गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड़ क्राफ्ट, लाहौर।
5. असित कुमार हाल्दर:– कॉलेज ऑफ फाइन आर्टस एण्ड़ क्राफ्ट –लखनऊ।
6. शैलेंद्र नाथ डे:–राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट, जयपुर।
7. शारदा चरण उक्कील:–शारदा उकील स्कूल ऑफ आर्ट, दिल्ली
8. मुकुल चंद्र डे:–गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्टस एण्ड़ क्राफ्ट ,कलकत्ता।

इन कलाकारो ने वॉश तकनीक को सुधीर रंजन खास्तगीर, बीरेश्वर सेन, राम जैसवाल, बद्रीनाथ आर्य, सुखवीर सिंह सिंहल, सनत चटर्जी और नित्यानन्द महापात्र आदि को वॉश प्रविधि में कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

वॉश पद्धति:–

बंगाल में विदेशी कलाकारों के आगमन से देश के विद्यार्थियों को नव्य शैलियों और तकनीकों को सीखाने का अवसर प्राप्त हुआ। वॉश पद्धति जलरंग की एक विधि है। इसमे पारदर्शी रंग का उपयोग किया जाता है तथा रंग को ब्रश के साथ निष्पादित किया जाता है, ''इस विधि को करने के लिए महीने से भी ज्यादा समय लग जाता था, इसमें रंगों का प्रभाव धुंधला दिखाई देता है। जिसको वॉश पद्धति कहते है।''(Seth 376) कुछ आधुनिक भारतीय कलाकार टैंपरा का प्रयोग करके वॉश चित्र को समापन करते थे। जिसमें ओपेक(गाड़े) रंग का उपयोग किया जाता था। जबकि अवनींद्रनाथ टैगोर ने इस पद्धति को जापानी कलाकारों से सीखा था। लेकिन उन्होंने इसमें भारतीय पद्धति को मिश्रण करके नवीकृत पद्धति को सबके सम्मुख प्रस्तुत किया। इनका उपयोग विशेष रूप से दृश्य चित्र तथा अन्य प्रकार के विषयों को चित्रित करने के लिए किया।

वॉश पद्धति की तकनीक:–

वॉश चित्रण की तकनीक बंगाल स्कूल की विशेषता है। बंगाल स्कूल के चित्रकारों ने अपने चित्रों में जल. रंग, टेम्परा रंग, इंक, का प्रयोग किया था, परंतु उनकी चित्रण विधि में भारतीय, चीनी, जापानी आदि प्रणालियों का अनुसरण किया गया है। चित्रकार को वॉश पद्धति में चित्र बनाने के लिए अच्छी गुणवता वाले पेपर की आवश्यकता होती है, मुख्यत: रूप से कैंसन कागज, फैबियानों, कैंट पेपर, जर्मन स्क.लर पेपर आदि का प्रयोग किया जाता है। सबसे पहले कागज पर चित्र बनाया जाता है, जिसमें रेखा एकदम सटीक होनी चाहिए। उसके बाद चित्र को पानी के साथ गीला करके, उसके ऊपर रंग फैलाकर सुखाने के लिए छोड़ दिया जाता है। इसके पश्चात् चित्र आकृतियों को भरने के लिए रेखांकन को पुन: अन्य रंग से उभार दिया जाता है यह प्रकिया बारम्बार दोहराने के बाद, चित्र पूर्ण होने पर सफेद रंग तथा छाया का भी उपयोग किया जाता है। लाल और काले रंग का उपयोग रूपरेखा बनाने के लिए करते है। वॉश प्रविधि में धुंधलापन प्रभाव ही चित्र को आकर्षण बनाता है। यह पोत एक रहस्मयी वातावरण का निर्माण करता है।

वॉश पद्धति के प्रमुख कलाकार

कत्सुता शोकिन:–

कत्सुता शोकिन एक प्रसिद्ध जापानी कलाकार है। उन्होंने भारत और जापान की सांस्कृतिक और कलात्मक संबंधों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जापान से हिषिदा, याकोयामा के अतिरिक्त कलाकार शोकिन ने टैगोर परिवार को इंक वॉश पद्धति सिखाने में सहायता की है। शोकिन हाषिमातो गाहो के शिष्य थे। ''1905–1907 ई. में उन्होंने भारत में आगमन किया। भारत यात्रा के दौरान उनके बहुत सारे कार्य नष्ट हो गए थे।''(Igrashi 1) शोकिन ने अजंता की यात्रा के दौरान बौद्ध धर्म से सं.बंधित चित्र बनाएं, इसके साथ–साथ उन्होंने भारतीय विषयों को भी चित्रित किया। इन्होंने भारत में समय व्यतीत करके महत्वपूर्ण विषयों को चित्रित किया जिनमें से राम, सीता और लक्ष्मण, राम चित्र, बुद्ध और सुजाता आदि।

याकोयामा और हीशिदा

याकोयामा ताइकान (सकाई हिदेमारो,1868–1958)और हिशिदा(1874–1911) दोनों जापानी कलाकार हैं। दोनों चित्रकारों ने मिलकर जापानी चित्रकला के पुनरोद्धार में योगदान दिया था। हिशिदा और याकोयामा ने टोकियों में अध्ययन किया था। दोनो कलाकारों ने हाशिमोतो गाहो के साथ जापानी

चित्रांकन का अध्ययन किया और इस स्कूल के प्रधानाचार्य ओकाकुरा काकूजा के प्रिय शिष्य बन गए। रवीन्द्रनाथ टैगोर के याकोयामा और हिशिदा दोनों के भारत आगमन के साथ भारतीय चित्रात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं। ओकाकुरा को टैगोर परिवार द्वारा याकोयामा ताईकान और हिशिदा के साथ कलकत्ता आमंत्रित किया गया था। इन दोनों कलाकारों के प्रवास के दौरान अवनींद्रनाथ टैगोर को तकनीक का एक विशद विवरण दिया गया था।

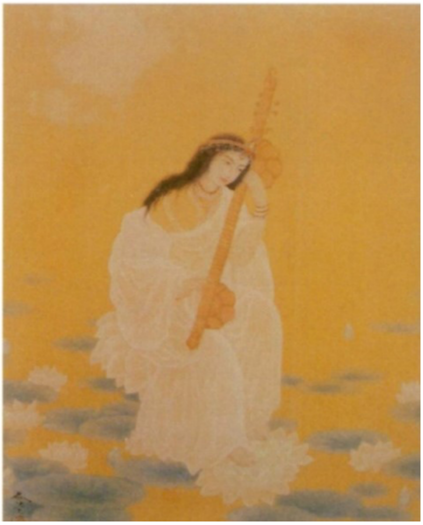

चित्र–1, हिशिदा शूंसो, सरस्वती, 1903, जलरंग वॉश पद्धति

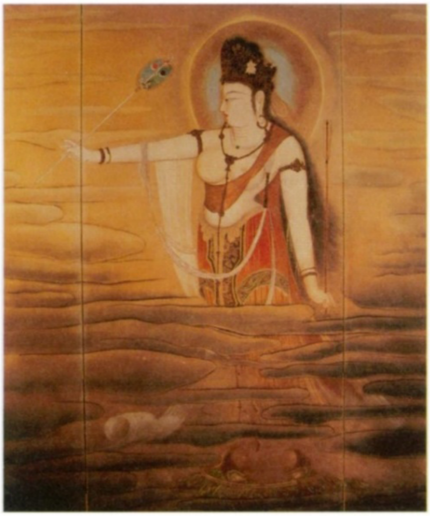

चित्र–2, अराई कैम्पो

अवनींद्रनाथ टैगोर

अवनींद्रनाथ ठाकुर भारत के सबसे प्रमुख कलाकार होने के साथ–साथ लेखक भी थे। ''उनका जन्म जोड़ासाँको नामक स्थान पर 1871ई. में हुआ।''(Jyotish 33) तथा वह कलात्मक रुचि रखने वाले सदस्य थे। कलात्मक रूचि होने के कारण घर में देश–विदेश की महान विभूतियों का आगमन रहता था। उन्होंने कला शिक्षा का प्रशिक्षण इट्ली के चित्रकार गिलहार्डी तथा पेस्ट्ल रंग और तैल तकनीक के गुण पश्चिम कलाकार एल.सी.पामर से सीखें। ''भारतीय शैली से प्रेरित होकर कविवर रवींद्रनाथ टैगोर की चित्रांगदा(नाट्क), विद्यापति व चंडीदास के पदों पर आधारित श्रृंखला बनाई तथा कृष्ण ालीला की चित्रमाला पूरी की और भारतीय पुराणकथाओं को चित्रित किया, जिनकी मौलिकता से ई.वी.हैवल प्रभावित हुए।'' (Jyotish 33) जोड़ासाँको में विदेशी कलाकारों को भी आमंत्रित किया जाता था। क्योंकि उस समय कलकत्ता, कला व संस्कृति के आदान–प्रदान का प्रमुख केंद्र था। आरंभ में अवनींद्रनाथ टैगोर की चित्रकला यूरोपीय यर्थावाद थी, क्योंकि कलकत्ता के कलाकार यूरोपीय तकनीक में काम करते थे। अवनींद्रनाथ टैगोर के चित्रों की विषय वस्तु भारतीय गाथाएँ, धार्मिक भावना और रामायण व महाभारत की कथाओं से सम्बन्धित हैं। इन्हीं दिनों याकोयामा, ताईकान और हिशिदा जैसे महान कलाकारों का आगमन भारत में हुआ, ''अवनींद्रनाथ टैगोर ने 1905ई. में वॉश चित्रण करना शुरू किया, जिसमें उन्होंने भारत माता चित्र की रचना की।''(Parimoo 187) प्रमुख चित्र :तिश्यरक्षिता, यात्रा का अंत, पासिंग ऑफ शाहजहाँ, भारत माता, अशोका क्वीन, उमर ख्याम श्रृंखला, मुगल श्रृंखला, अरेबियन नाईट श्रृंखला, कृष्णा श्रृंखला, रूक्मणी पत्र लिखते हुए और कमल के पत्ते पर आँसू की बूंद आदि।

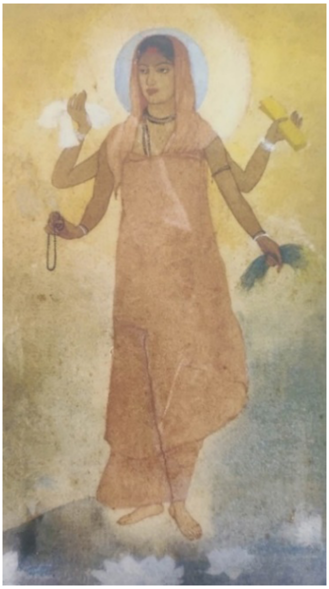

चित्र–3, अवनींद्रनाथ टैगोर, भारत माता, 1905, जलरंग वॉश पद्धति

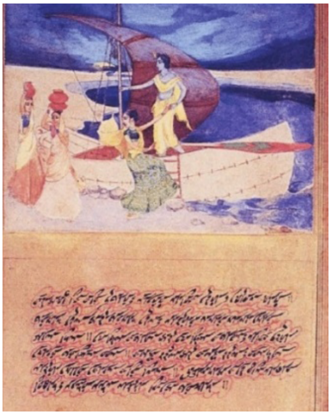

चित्र–4, अवनींद्रनाथ टैगोर, कृष्ण लीला–नाउ विहार, 1897, जलरंग वॉश पद्धति

नंदलाल बोस:–

अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्यों में नंदलाल बोस का नाम महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। इनमें कलाकार, शिक्षक और विचारक तीनों गुणों का समावेश था। उनकी कला और व्यक्तित्व पर अवनींद्रनाथ ठाकुर, रामकृष्ण परमहंस, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ ठाकुर का प्रभाव पड़ा। ''नंदलाल बोस का जन्म बिहार प्रदेश के मुंगेर जिले में 3 दिसंबर 1883ई. में हुआ था।''(Jyotish 46) उनकी कला शिक्षा कलकत्ता में हुई। कलकत्ता कॉलेज में रहकर ही उन्होंने रामायण विषय वस्तु पर चित्र बनाना शुरू किया, जिसमें राम रसिया, सती का देह त्याग आदि चित्रों का निर्माण किया। 1920–21 में लेडी हैरिंघम ने नंदलाल बोस तथा उनके साथी कलाकारों को अजंता की अनुकृतियाँ करने के लिए भेजा गया। नंदलाल बोस ने वॉश पद्धति के अतिरिक्त टैंपरा पद्धति, भित्ति चित्रण आदि विभिन्न तकनीकों में काम किया। उन्होंने चित्रकार होने के साथ–साथ एक सफल शिक्षक के रूप में भूमिका निभाई। अवनींद्रनाथ टैगोर नंदलाल बोस को शिव सिद्धि बोलते थे, क्योंकि नंदलाल बोस शिव चित्रित करने में माहिर थे। नंदलाल बोस के प्रमुख चित्र है, सती, शिव का विष्पान, अन्नपूर्णा, भीष्म और यम, एकलव्य, गंधारी, सावित्री आदि।

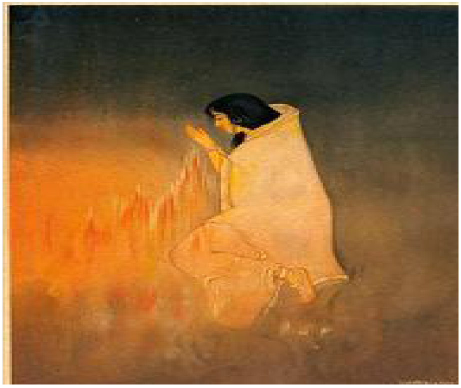

चित्र–5 सती, नंदलाल बोस, 1907, जलरंग वॉश प्रविधि

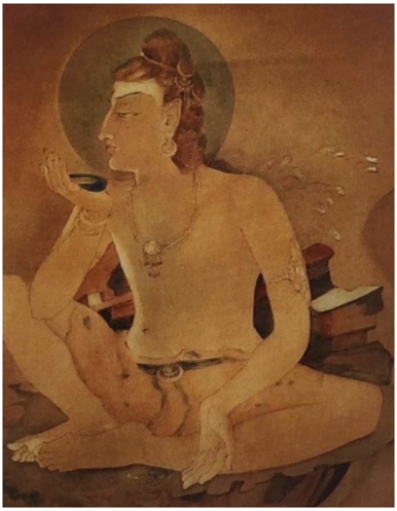

चित्र–6 शिव का विष्पान, वॉश तकनीक, 1933, जलरंग वॉश प्रविधि

गगनेंद्रनाथ टैगोर:–

गगनेंद्रनाथ टैगोर का जन्म 1867 ई. टैगोर परिवार में हुआ था, जिन्हें भारत के पहले आधुनिक चित्रकारों में से एक माना जाता है। ‘‘1907ई. में इन्होंने इंड्यिन सोसाइटी ऑफ ओरिएंट्ल आर्ट में अपनी भूमिका निभाई और 1912ई. में रवींद्रनाथ टैगोर की कृति जीवन स्मृति पर चित्र श्रृंखला तैयार की। गगनेंद्रनाथ टैगोर ने वॉश पद्धति में कार्य जापानी कलाकार ताईकान और हिशिदा से सीखा।’’ (Goswami 19) घनवादी कलाकार होने के साथ–साथ व्यंग्यचित्र पोर्टफोलियो के लिए भी चित्रण का कार्य किया। इन्हीं कारणों की वजह से उनकी गणना भारतीय कला के पहले आधुनिक कलाकार के रूप में होती है। गगनेंद्रनाथ टैगोर के चित्र है, अर्जुन और चित्रांगदा, माया कानन, चैतन्य, रात्रि में दुर्गा पूजा का जलूस आदि।

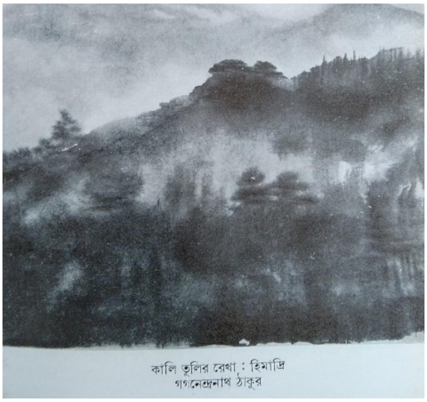

चित्र–7, पर्वत, गगनेंद्रनाथ टैगोर, वॉश तकनीक ऑन पेपर

असितकुमार हाल्दार:–

बंगाल स्कूल में अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्यों में असित कुमार का नाम महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनका जन्म 1890ई. कलकत्ता में हुआ। उन्होंने गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्ट्स कॉलेज में दाखिला लिया। ''हाल्दार मूर्तिकार, शिल्पकार और दाशर्निक थे। 12 वर्ष की आयु में ही उन्होंने लंदन के सुप्रसिद्ध वास्तुशिल्पी लियोनार्ड जेनिग्स शिल्पकला का प्रशिक्षण लिया।''(Goswami 25) असित कुमार हाल्दार जिस बंगाल स्कूल को लखनऊ लेकर आये, उस कला को रवींद्र कला और अवनींद्र कला कहा जाता है। इसी समय ई.वी.हैवल और आनंद कुमार स्वामी के सानिध्य में रहकर राष्ट्रीय कला आंदोलनों में भाग लिया। उसके पश्चात् भारत सरकार के पुरातत्व विभाग हेतु सुमेंद्रनाथ गुप्त के साथ जोगीमारा और सुरेंद्रनाथकर के साथ बाघ गुफा चित्रों की प्रतिलिपि तैयार करने का अवसर प्राप्त हुआ। 1934ई. में रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्टस, लंदन के फेलो चुने जाने वाले पहले भारतीय थे। असित कुमार हाल्दार ने वॉश प्रविधि में अनेक कलाकृतियों की रचना की है। प्रमुख चित्र है, अनटाइट्ल (बुद्ध), औरत पढ़ते हुए, माँ और बच्चा, वैसवदत्ता, संथाल कोल वर्कर, नृत्यांगना आदि हैं।

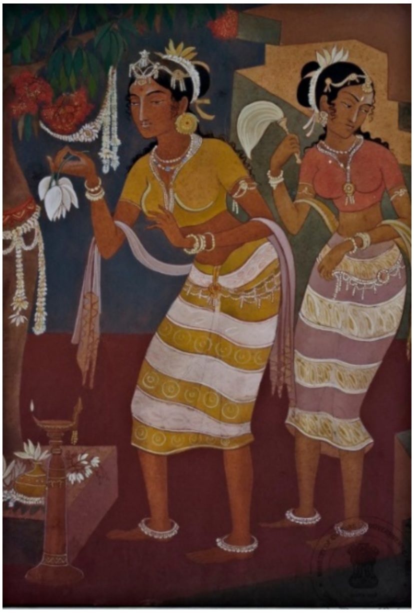

चित्र–8, वैशवदत्ता, असित कुमार हाल्दार, जलरंग वॉश पद्धति

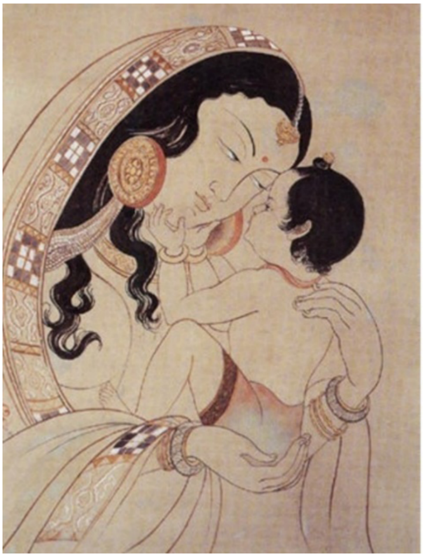

चित्र–9, माँ और बच्चा, जलरंग वॉश पद्वति, असित कुमार हाल्दार, जलरंग वॉश पद्वति

अब्दुल रहमान चुगताई

अब्दुल रहमान चुगताई पाकिस्तान के चित्रकार थे। उन्हें दक्षिण एशिया का पहला महत्वपूर्ण आधुनिक मुस्लिम कलाकार और पाकिस्तान का राष्ट्रीय कलाकार माना जाता है। 1934ई. में खान बहादुर, 1960ई. में पाकिस्तान के हिलाल–ए–इमिताज, 1968ई. में ''प्राइड ऑफ पर–फॉर्मेंस'' के लिए राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया। ''चुगताई ने मयूर स्कूल आर्ट में दाखिला लिया और जलरंग वॉश प्रविधि में अनेक कलाकृतियों को चित्रित किया। उन्होंने ग़ालिब की गज़ल पर आधारित चित्र संग्रह तैयार किया। उनको रंगो का सम्राट भी कहा जाता है।'' (Agarwal 47) उनकी कला में भारतीय तथा फारसी तत्वों का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। अब्दुल रहमान चुगताई के चित्र है। तपस्वी बुद्धा, लैला, हीरामन तोता, बाँसुरी के साथ इत्यादि है।

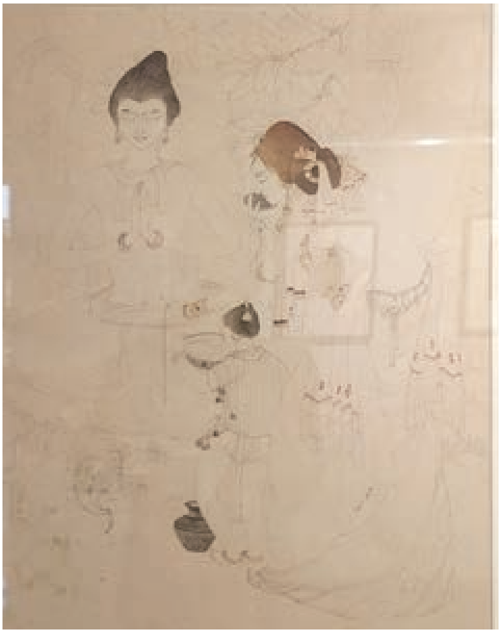

चित्र–10 तपस्वी बुद्धा, अब्दुल रहमान चुगताई, जलरंग वॉश पद्धति,

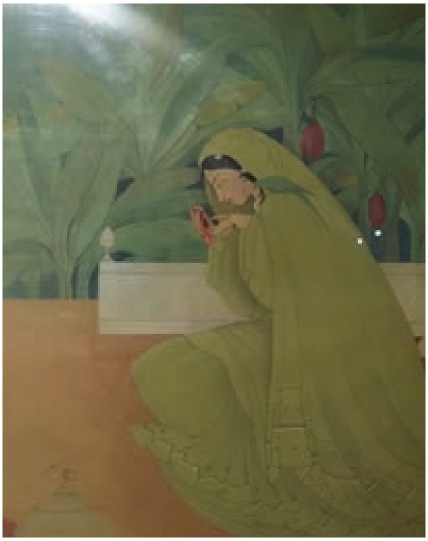

चित्र–11, हिरामन तोता, अब्दुल रहमान चुगताई, जलरंग वॉश पद्धति

क्षितिंद्रनाथ मजूमदार

क्षितिंद्रनाथ मजूमदार का जन्म 1891–1975 ई. पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हुआ था। आचार्य अवनींद्रनाथ ठाकुर के अनुयायियों में शिक्षार्थी मजूमदार ने धार्मिक और पौराणिक कथाओं को चित्रित किया। रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट्स लन्दन के अध्यक्ष श्री रोथेस्टीन भारत भ्रमण करते हुए कलकत्ता कला विद्यालय आए, क्षितिंद्रनाथ मजूमदार को चैतन्य के विषय चित्रित करने के लिए कहा था। ''चैतन्य महाप्रभू का ग्रहत्याग और नृत्य चित्र बहुत आकर्षण तरीके से बनाए है,'' (Chaturvadi 50) जिनमें से कुछ चित्र इंड्यिन प्राइस द्वारा चित्र गीत गोंविद नाम चित्रावती के रूप में प्रकाशित भी हुए। कुछ समय पश्चात् कलकत्ता के शिक्षक के रूप मे भूमिका निभाने के बाद डॉ. अमरनाथ झा ने उनको इलाहाबाद विश्वविद्यालय में आंमत्रित किया था। क्षितिंद्रनाथ मजूमदार के चित्र: बादलों में नृत्य करती अप्सराएँ, यक्ष–यक्षणी, यमुना, अभिसारिका, गीत गोविंद, चैतन्य आदि।

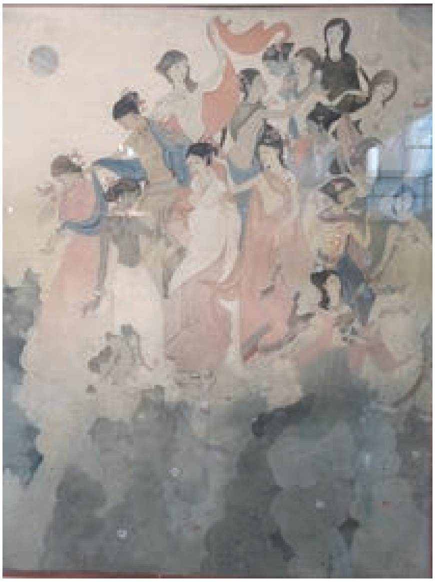

चित्र–12, बादलों में नृत्य करती अप्सराएँ, अब्दुल रहमान चुगताई, टेम्परा और वॉश पद्धति

अत: असित कुमार हाल्दार ने वॉश चित्रण पर विशेष ध्यान दिया और सदैव यही चाहते रहे कि लखनऊ वॉश कला की अपनी पहचान बने, इसलिए लखनऊ वॉश चित्रण बंगाल के वॉश चित्रण से भिन्न पहचाना जाता है। यहाँ के वॉश चित्रण में रंगों की समृद्धि, शुद्धता और पारदर्शी रंगों से वातावरण में अलग आकर्षण दिखाई देता है, जिसमें उन्होंने अपारदर्शी रंगों का प्रयोग नहीं किया था इनमें से प्रमुख कलाकार जिन्होंने वॉश चित्रण को प्रसिद्धि दिलाने में सराहनीय भूमिका निभाई है। सुखवीर सिंहल, हरिहर लाल मेढ़, बद्रीनाथ आर्य, सनत चटर्जी, गोपाल मधुकर और राम जैसवाल आदि आते हैं।

सुखवीर सिंहल (वॉश पेंटिग)

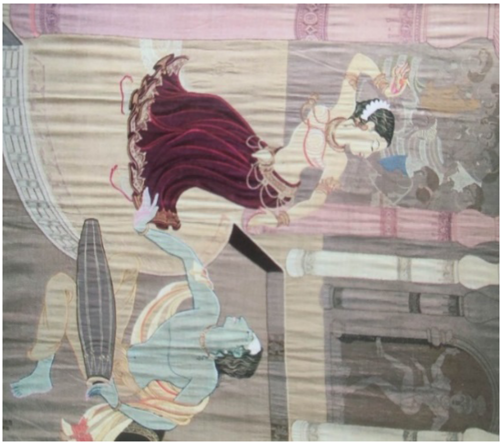

चित्र–13, सुखवीर सिंहल (वॉश पेंटिग)

राम जैसवाल वार्श चित्र

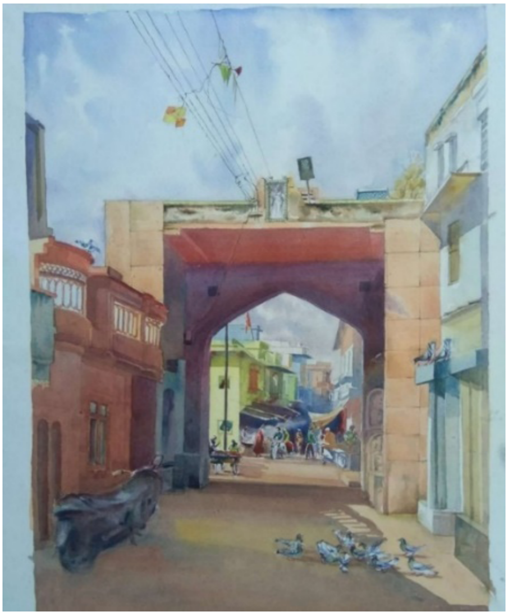

चित्र–14 राम जैसवाल (वॉश पेंटिग), किशनगढ़

गोपाल मधुकर वॉश चित्र:-

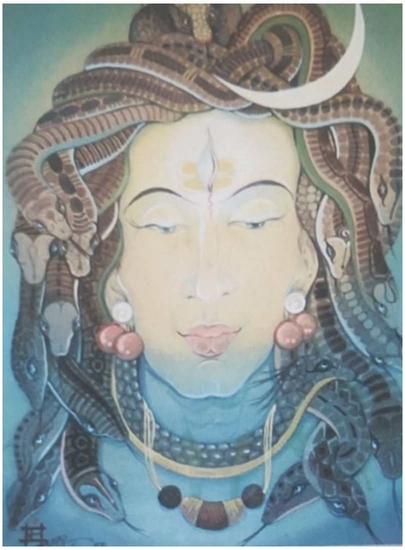

चित्र-15 शिव, वॉश पद्धति

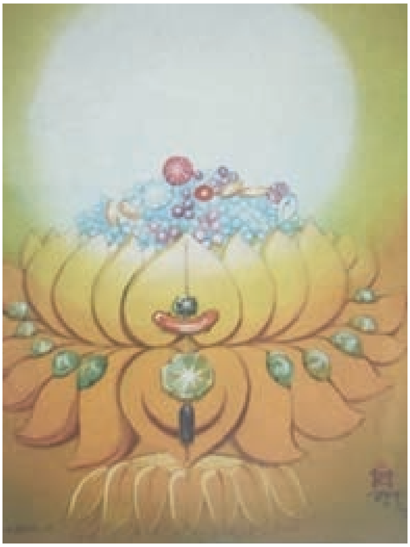

चित्र-16, पदम, वॉश पद्धति,

बद्रीनाथ आर्य के वॉश चित्र

हरिहर लाल मेढ़ के वॉश चित्र

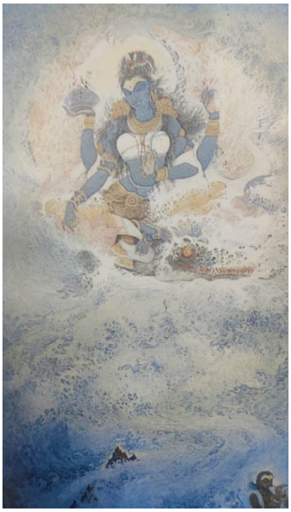

चित्र-17, गंगा, वॉश पद्धति, बद्रीनाथ आर्य,

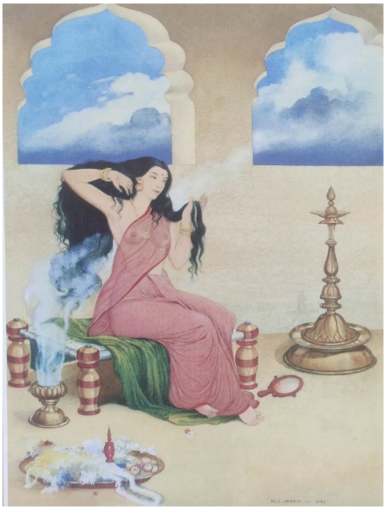

चित्र-18, मेघदूत्म श्रृंखला, वॉश पद्धति

निश्कर्ष

भारतीय कला में वॉश पद्धति की विशेष भूमिका रही है। आधुनिक कलाकारों ने इस पद्धति को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और वॉश पद्धति में अवनींद्रनाथ टैगोर के शिष्यों ने इस पद्धति को कुछ समकालीन कलाकारों तक पहुँचाया। आधुनिक से समकालीन में आते–आते यह पद्धति बिल्कुल समाप्त हो गई, लेकिन कुछ ही संस्थानों के कलाकारों ने वॉश पद्धति में चित्रों की रचना की, जिनमें सुखवीर सिंहल, हरिहर लाल मेढ़, बद्रीनाथ आर्य, सनत चटर्जी ,गोपाल मधुकर और राम जैसवाल आदि कलाकारों ने अपना विशेष योगदान दिया है। कलाकारों के योगदान को और वॉश पद्धति के महत्व को समझने के लिए शोध पत्र लिखा गया है।

Works Cited:

Agarwal, Giraj K. *Adhunik Bhartiye Chiterkala*. Sanjay Publication, 2015.

Ali, Asad. "Badri Nath Arya:Contemporary Indian Art Series." *Lalit Kala Akademi, Rabindra Bhawan*, p.1-30.

Banerji, Debashish. *The Alternate Nation of Abanindranath Tagore*. Sage Publication Ltd, 2009, sk.sagepub.com/books/the-alternate-nation-of-abanindranath-tagore. Accessed 10 Sept. 2022.

Basu, Nandlal. *Shilp Charcha*. E- Book, Vishwabharti Bhattachariya Publication, 1956.

Chaturvadi, Mamta. *Samkalin Bhartiye kala*. 6th ed., Rajsthan Hindi Granth Academy, 2016.

Enaga, Shgemi. "The Interaction of Bengali and Japanese Artistic Milieus in the First Half of the Twentieth Century (1901–1945): Rabindranath Tagore, Arai Kanpō, and Nandalal Bose." *Journal of the International Research Center for Japanese Studie*, vol. 21, 1 Jan. 2009, pp. 149-181, inagashigemi.jpn.org/uploads/pdf/JN2104.pdf. Accessed 10 Aug. 2022.

Goswami, Premchander. *Adhunik Bhartiye Chiterkala k Adhar Santambh*. Rajsthan Hindi Granth Akademy, 2011.

Goyal, Amita R. "Impact of Japanese Artist's Wash Technique in the Expansion of Modern Bengal School." *Asian Rassonance*, vol. 6, no. 1, Jan. 2017, pp. 58-60, www.socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/1/138/1907110618351st%20amita%20goyal.pdf.

Igarashi, Masumi N. *Draw Toward India: Okakura Kakuza Interpretation O Rajendralala Mitra Win His Construction of Pan- Asianism and the History of Japanse Art*. 2010. University of North Carolina At Chapel Hill, PhD dissertation.

Igrashi, Masumi. *Katsuta Shōkin: A Japanese Painter at the Government School of Art, Calcutta, 1905–1907*. 2019. Okayama University, Okayama, Japan, PhD dissertation. mosai.org.in/wp-content/uploads/2019/09/Igarashi_Masumi_paper.pdf.

"Ink and Wash Painting." *http://www.visual-arts-cork.com/painting/ink-and-wash.htm*, Accessed 2 Aug. 2022.

Jyotish, Joshi. *Adhunik Bhartiye kala: kala main Navjagran ke Sutradar*. Yash Publication, 2010.

Jyotish, Jyotish. *Adhunik Bhartiye Kala: Parmpara main Peryog k Shipkar, Nandlal Boss*. Yash Publication, 2010.

Mishra, Avdesh. "Bhartiye Samkalin Kala or Lacknow k kalakar." *Kala Dirgha*, Apr. 2010, pp. 1-100.

Parimoo, Ratan. *Art of Three Tagores from Revival to modernity*. Sunit Kumar Jain, 2011.

Rodwell, Jenny. *The complete Watercolour Artist*. Pelham books Ltd,

Seth, Pratima. *Dictionary of indian art and artist*. Maping prakashan pvt Ltd, 2007.

Singh, Kishore. *The Art of Shantiniketan*. D.A.G.Modern, 2015.

Verma, Avinash B., et al. *Bhartiye Chiterkala ka Itihas*. Perkash book depot, 2020.

Image sources

चित्र–1 Enaga, Shgemi. "The Interaction of Bengali and Japanese Artistic Milieus in the First Half of the Twentieth Century (1901–1945): Rabindranath Tagore, Arai Kanpō, and Nandalal Bose." *Journal of the International Research Center for Japanese Studie*, vol. 21, 1 Jan. 2009, pp. 149-181, inagashigemi.jpn.org/uploads/pdf/JN2104.pdf. Accessed 10 Aug. 2022.

चित्र–2 Enaga, Shgemi. "The Interaction of Bengali and Japanese Artistic Milieus in the First Half of the Twentieth Century (1901–1945):

Rabindranath Tagore, Arai Kanpō, and Nandalal Bose." *Journal of the International Research Center for Japanese Studie*, vol. 21, 1 Jan. 2009, pp. 149-181, inagashigemi.jpn.org/uploads/pdf/JN2104.pdf. Accessed 10 Aug. 2022.

चित्र–3 Singh, Kishore. *The Art of Shantiniketan*. D.A.G.Modern, 2015, 90.

चित्र–4 Banerji, Debashish. *The Alternate Nation of Abanindranath Tagore*. Sage Publication Ltd, 2009, sk.sagepub.com/books/the-alternate-nation-of-abanindranath-tagore. Accessed 10 Sept. 2022.

चित्र–5 https://www.sothebys.com/en/buy/auction/2020/modern-contemporary-south-asian- art-2/nandalal-bose-sati ,2022, 0ct

चित्र–6 Singh, Kishore. *The Art of Shantiniketan*. D.A.G.Modern, 2015, 90.

चित्र–7 Basu, Nandlal. *Shilp Charcha*. E- Book, Vishwabharti Bhattachariya Publication, 1956.

चित्र–8 https://arjuna-vallabha.tumblr.com/post/623819281980850176, 2023, Feb

चित्र–9 https://www.artnet.com/artists/asit-kumar-haldar/ 2023, Feb

चित्र–10 Personal photography in NGMA Gallary Delhi, 2022, 8 June.

चित्र–11 Personal photography in NGMA Gallary Delhi, 2022, 8 June.

चित्र–12 Personal photography in NGMA Gallary Delhi, 2022, 8 June.

चित्र–13 Mishra, Avdesh. "Bhartiye Samkalin Kala or Lacknow k kalakar." *Kala Dirgha*, Apr. 2010, pp.16.

चित्र–14 Personal Interview, Ram Jaiswal, 2022, 27 May

चित्र–15 Neeru. "Ghopal Madhukar Chturvadi." *Kala Dirgha*, Apr. 2010, pp.86.

चित्र–16 Neeru. "Ghopal Madhukar Chturvadi." *Kala Dirgha*, Apr. 2010, pp.86.

चित्र–17 Ali, Asad. "Badri Nath Arya:Contemporary Indian Art Series." *Lalit Kala Akademi, Rabindra Bhawan*, p. 7.

चित्र–18 Mishra, Avdesh. "Wash main Meghdoot: Harihar Lal Meid." *Kala Dirgha*, Apr. 2010, pp.37